

ये सागर है

परिकल्पना

राघवेन्द्र प्रसाद तिवारी





वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© डॉ. हरीसिंह गौर के. वि.वि. सागर (म.प्र.)

प्रथम संस्करण : 2019

ISBN 978-93-89341-04-1

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-22825424, 09350809192

www : anuugyabooks.com

मूल्य : 850 रुपये

आवरण

गोविन्द सरवैया

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

YE SAGAR HAI

Collection of Essays & Memoirs of Sagar

edited by Dr. Suresh Acharya & Dr. Laxmi Pandey

6 / वे सागर है

□ प्राचीन पजनारी ग्राम का पुरातत्वीय अध्ययन	— रवीन्द्रनाथ अग्रवाल	108
5. दो-दो मुख्यमन्त्रियों को देने वाला शहर है सागर !	— डॉ. दीपक तिवारी	113
6. सागर की भू-आकृतियाँ : नगरीय विस्तार	— प्रो. पुरुषोत्तम सोनी	120
7. भारत में हिन्दी पत्रकारिता और पत्रकारिता में सागर	— डॉ. राकेश शर्मा	129
8. सागर : मेरा सागर	— सुरेश आचार्य	136
9. सागर के प्रमुख आधुनिक साहित्यकार	— आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	146
10. सागर जिले के कलम के सिपाही	— बृन्दावन राय 'सरल'	170
11. ई.एम.आर.सी. सागर : सार्थकता और रचनात्मक सृजन के नवीन सोपान	— डॉ. पंकज तिवारी	188
12. सागर क्षेत्र में रंगकर्म	— राकेश सोनी	194
13. अतीत से अब तक—साहित्यिक गतिविधियाँ	— मणिकांत चौबे 'बेलिहाज'	200
14. ए ग्रेट बैच मार्क : ब्रिटिश हुकूमत ने अफगान, बर्मा, श्रीलंका का केन्द्र बिन्दु सागर के कैन्ट एरिया में किया था चिन्हित	— अभिषेक यादव	205
15. सागर के मायने	— लक्ष्मी पाण्डेय	206

खंड ब

सागर : मील के पत्थर

1. पद्माकर		211
2. उद्भट विद्वान डॉ. हरीसिंह गौर	— शम्भुदयाल गुरु	217
3. डॉ. हरीसिंह गौर दमड़ी दमड़ी माया जोड़ी	— कान्तिकुमार जैन	221
4. रविशंकर शुक्ल का आरम्भिक जीवन		229
5. मीर कवि	— पद्मश्री पं. मुकुटधर पाण्डेय	232
6. कम खाना, सागर में रहना और पढ़ना-लिखना अर्थात् जहूरबख्श	— डॉ. बलभद्र तिवारी	234

सागर के प्रमुख आधुनिक साहित्यकार

आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

बुन्देलखंड में साहित्य, संस्कृति और कला की नगरी सागर की राष्ट्रीय पहचान है। इस भूमि पर साहित्यिक चेतना का अंकुरण शताब्दियों पूर्व हुआ था। 16वीं शती में सागर में कृष्णभट्ट देवर्षि नामक आचार्य कवि हुए हैं। कृष्णभक्त कवि हरिदास स्वामी (सं. 1795 गढ़ाकोटा) का उल्लेख आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास में किया है। नाथूराम चतुर्वेदी ब्रज (सं. 1848 जैसीनगर, सागर) ने भक्तिपरक रचनाएँ लिखीं। तीन हजार छन्दों की रचना कर विख्यात हुए। काले खाँ (रहली) कृष्णचन्द्र का स्तवन, के लिए लोकप्रिय हुए। भगवतशरण चतुर्वेदी (जैसीनगर, 1887) ने द्रौपदी स्वयंवर, अभिमन्यु आख्यान, मीरा आख्यान, सुदामा आख्यान एवं भीष्म आख्यान ग्रन्थों की रचना की। रीतिकालीन हिन्दी कविता के सिरमौर महाकवि पद्माकर सुविख्यात हैं। लोककवि ईसुरी की विश्वप्रसिद्धि बुन्देलखंड के लिए गौरव की बात है। रीतिकाल के अन्य प्रमुख कवियों में कुमार मणि (सं. 1720) बदनेश (गढ़ाकोटा) का भी नाम लिया जाता है।

साहित्य की सुदीर्घ विरासत पर सागरवासियों को गर्व होना चाहिए। आधुनिक काल में साहित्य की विविध विधाओं कविता, गीत, गजल, छन्दबद्ध कविता, कथा-साहित्य, नाटक, संस्मरण, निबन्ध आदि में सागर में राष्ट्रीय स्तर का प्रचुर साहित्य लिखा गया है। यहाँ की साहित्यिक प्रतिभाओं में अनेक ने हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय परिदृश्य पर अपनी महत्त्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज कराई। नये-नये प्रयोग किए जा रहे हैं। भाषा-शैली, शिल्प की दृष्टि से स्तरीय रचनाएँ हमारे सामने आई हैं। सागर में रचित हिन्दी साहित्य की पहचान देश में है और इसके लिए साहित्यकारों को पद्मश्री और अन्य महत्त्वपूर्ण सम्मानों पुरस्कारों से नवाजा गया है। हम यहाँ सागर के प्रमुख साहित्यकारों का संक्षिप्त परिचय मात्र दे रहे हैं।

पं. विनायक राव (पौष शुक्ला 10 सं, 1912 को सागर में जन्म और